Pedagogy of Physical Science

Date
15/04/2020

Pedagogy of Mathematics — B.Ed Ist Year

Pedagogy of Biological Science — Period - V th

Topic - Micro Teaching

सूक्ष्म शिक्षण चक्र को निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है।

1 - पाठ योजना बनाना ⇒ सूक्ष्म शिक्षण मे सर्वप्रथम किसी एक विशिष्ट कौशल पर पाठ तैयार किया जाता है। लेकिन इसमे निर्धारित समय हेतु निर्धारित विषय वस्तु एवं निर्धारित कौशल को ध्यान मे रखकर इसका नियोजन किया जाता है।

2 - अध्यापन ⇒ लघु पाठ योजना किस कौशल से सम्बन्धित बनायी गयी है। उसे छात्राध्यापक को वास्तविक कक्षा के 5-10 छात्रो को पढाना होता है। अधिकतर प्रशिक्षण संस्थानो मे विडियो टेप रिकॉर्डर उपलब्ध नही होने के कारण पर्यवेक्षक ही छात्राध्यापको को वास्तविक स्थिती से अवगत कराते है। पाठ की समाप्ति के बाद इस पर विचार - विमर्श किया जाता है।

3 - प्रतिपुष्टि → इस पद मे शिक्षक द्वारा छात्राध्यापक को कक्षागत व्यवहार की समीक्षा की जाती है और सम्बन्धित छात्राध्यापक को उसकी गलतियो एवं अच्छाइयो पर सुझाव

दिये जाते है, इस ही प्रोतपुष्टि कहते है।

4- पुनः नियोजन ⇒

जिस पाठ को छात्राध्यापक पूर्व मे ही पढ़ा चुके होते है। उसमे जो कमियां रह जाती है, उनसे छात्राध्यापक को अवगत करा दिया जाता है। इन कमियों को ध्यान मे रखकर उसी विषय - वस्तु पर अथवा दूसरी विषय वस्तु पर पुनः पाठ तैयार करना होता है। इसे ही पुनः नियोजन कहते है।

5- पुनः शिक्षण ⇒

पुनः नियोजित पाठ को पुनः पढाया जाता है। ताकि जो त्रुटियां पूर्व मे छात्राध्यापक से हुई है।

6- पुनः प्रोतपुष्टि ⇒

पुनः शिक्षण कराये जाते समय निरीक्षक छात्राध्यापक कि क्रियाओ को नोट करता रहता है। अथवा विडियो टेप रिकॉर्डर मे रिकॉर्डिंग करता है। जिससे वह समाप्ति के उपरान्त उसको बोधित एवं अबोधित क्रियाओ से उसे अवगत कराया जा सके

इस प्रकार यह क्रम तब तक चलता रहता है। जब तक कि छात्राध्यापक सम्बन्धित शिक्षण कौशल में दक्षता प्राप्त न कर ले।

सूक्ष्म शिक्षण के लाभ ⇒

1- अध्यापक के व्यवहार में सुधार अध्यापक के व्यवहार में सुधार करने के लिये सूक्ष्म - शिक्षण प्रभावशाली प्रतिपोषण प्रदान करता है।

2 शिक्षण कौशल का ज्ञान

3- शिक्षण कौशलों का विकास

4- शिक्षण अभ्यास का विकास

5- वैयक्तिक प्रशिक्षण

6- वास्तविक शिक्षण

7- जटिलताओं को कम करना

8- अपने शिक्षण कार्य का विश्लेषण

9- अनुसंधान करना

⇒ सूक्ष्म शिक्षण की मान्यताएं ⇒

सूक्ष्म शिक्षण की मान्यताएं निम्न प्रकार है।

1- वास्तविक शिक्षण

2- जटिलताओं को कम करना

3- प्रशिक्षण पर केन्द्रित

4- अभ्यास का संवृद्ध नियन्त्रण

5- परिणाम के ज्ञान का विस्तार

⇒ सूक्ष्म शिक्षण की सीमाएं ⇒

सूक्ष्म शिक्षण की सीमाएं (दोष) निम्न प्रकार है।

1⇒ छोटे छोटे प्रशिक्षण महाविद्यालयों में सूक्ष्म शिक्षण प्रयोगशाला की व्यवस्था करना महंगा पड़ता है।

2⇒ सूक्ष्म शिक्षण प्रविधि में प्रशिक्षण के लिये पर्याप्त समय की आवश्यकता रहती है।

3⇒ सूक्ष्म शिक्षण में प्रयोग करने के लिये विडियो, टेप रिकॉर्ड तथा अन्य उपकरणों की आवश्यकता होती है।

4⇒ यह विधि स्वयं में सम्पूर्ण विधि नहीं है।

5⇒ प्रशिक्षकों को भी इस विधि के प्रयोग का उचित प्रशिक्षण दिया जाता है।

15/4/2020